और कुछ नहीं हुआ

निर्मल चन्द "निर्मल"

Scanned with OKEN Scanner

और कुछ नहीं हुआ

"इन गर्दिशों को सब कुछ अनुकूल सा लगता है,
विपदाओं का निमंत्रण अब चूल सा लगता है
किससे करें शिकायत सब सूरतें वही हैं
जो हमने चुकाया है महसूल सा लगता है।"

- निर्मलचन्द्र 'निर्मल'

मूल्य : पन्द्रह रुपया
प्रकाशक : राष्ट्र भाषा प्रचार समिति
: शाखा - सागर [म. प्र.]

सर्वाधिकार : निर्मलचन्द्र "निर्मल"

प्रथम संस्करण : पांच सौ प्रतियां / १९९४
मुद्रक : अजन्ता प्रिंटिंग प्रेस, वण्डा

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, शाखा सागर (म. प्र.)

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

१	पद-चिह्न	: १
२	बेरोजगार श्रमिक	: २
३	एम. ए. पास	: ३
४	तलाशें तो कहां	: ५
५	ग़म यही है	: ६
६	और तो कोई बात नहीं	: ८
७	लोग सकुचाने लगे हैं	: ९
८	जमाने से पहले	: १०
९	नहीं मालूम	: ११
१०	सुख	: १२
११	ये कलम चलेगी उस क्षण तक	: १३
१२	वेदना की हर डगर बन गई मुस्कान	: १६
१३	चाहिए फिर एक गांधी	: १७
१४	अपना सा दिखता कोई हाथ नहीं है	: १८
१५	आदमी की भूख	: २०
१६	आदमी	: २१
१७	सारा देश पुकारे मांझी	: २२
१८	मां	: २४
१९	आवारा बादल	: २५
२०	ताज महल को पत्र	: २६
२१	पुरुष्कार	: २९
२२	ताज महल का पत्र	: ३१
२३	सम्मान बोध	: ३३
२४	अपना नगर सुहाना	: ३५
२५	ये मेरा नगर है	: ३७

Scanned with OKEN Scanner

२६ अपनों में ऐसे भी होंगे : ३९
२७ पीने वाले बहुत यहां पर : ४१
२८ समय यथावत् रहा : ४३
२९ बन्दर और मदारी : ४५
३० और कुछ नहीं हुआ : ४६
३१ भिक्षा वृत्ति निषेध : ४८
३२ कलम को बल दो : ४९
३३ मंजिल नहीं मिली : ५२
३४ पागल खाने का मुआयना : ५३
३५ प्रगति के नाम पर : ५८
३६ सूरज तुम नेता हो : ६०
३७ रामू देखता है : ६२
३८ नेता देखता है : ६३
३९ समय देखता है : ६४
४० अपना ब्रजधाम : ६५

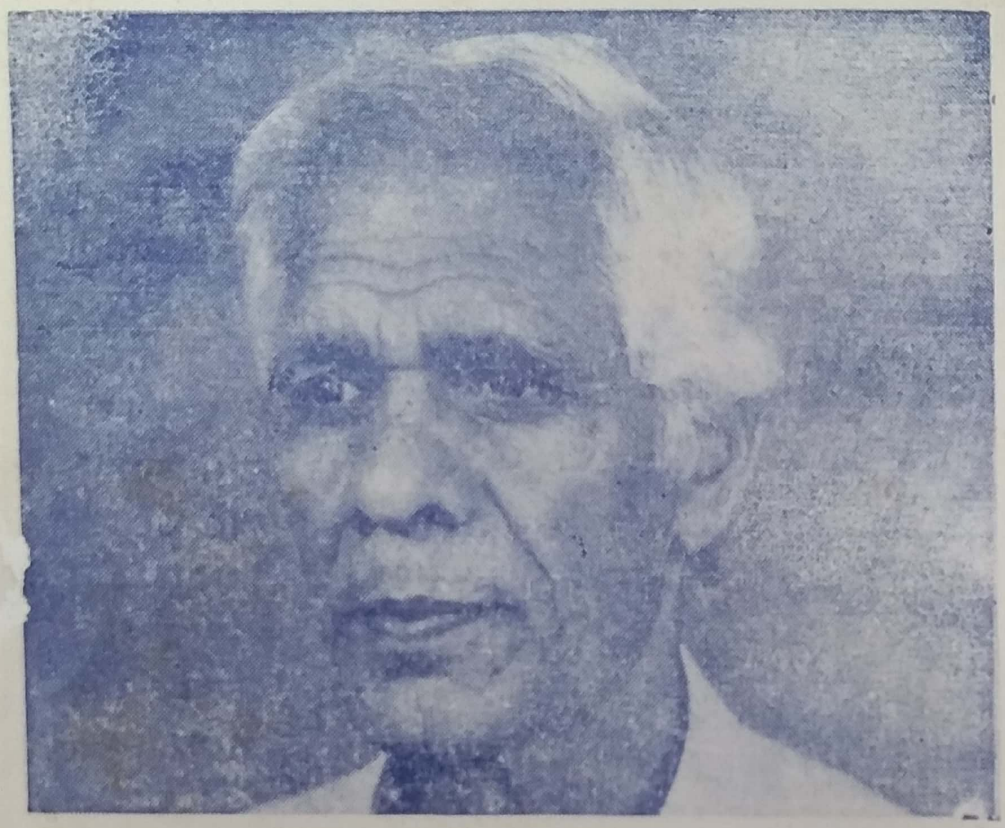

कवि	:	निर्मलचन्द्र "निर्मल"
पिता श्री	:	स्व. श्री पन्नालाल जी जैन
जन्म	:	६, मार्च १९३१ चकराघाट, सागर
शिक्षा	:	एम. ए. (भूगोल) बी. एड. बेसिक
निवास	:	पुरव्याऊ टौरी, जनता स्कूल के पास सागर (म. प्र.)
	:	४७००१२
प्रकाशित कृति	:	"उठाओ कुदाली"
सम्बद्ध	:	संस्था "साहित्य सागर" के अध्यक्ष राष्ट्र भाषा प्रचार समिति सागर शाखा के महामंत्री हिन्दी साहित्य सम्मेलन सागर शाखा के कार्यकारिणी सदस्य प्रगतिशील लेखक संघ शाखा सागर के अध्यक्ष मण्डल के सदस्य अखिल भारतीय श्रमण साहित्यकार परिषद्, सागर के संरक्षक।

Scanned with OKEN Scanner